मैनूं याद बिहारी जी दी आवे बांका नित मेरे सुपने च आवे

मैनूं याद बिहारी जी दी आवे बांका नित मेरे सुपने च आवे
नीं मैं वृंदावन कुम दी फिरां राती जदों मेरी आख लग जावे,

ओदे प्रेम जाल विच एैसी फस गई काम कार मेनू पुल्ले संसार दे,
रोक टोक मेनू चंगी नइयों लगदी कर बार वाले ताने मैनूं मार दे,
आंदे जांदेया नू पुछ्दी फिरां कदों बांके बिहारी बुलावे ,
नीं मैं वृंदावन कुम दी.....

सेवा कुञ्ज निधि वन यमुना दे मैनूं औंदे ने याद नजारे,
कन्हा विच मुरली दी तुन गूंजदी ओदे रूप तो जावां बलिहारे,
ओदे सांकरे बजार कुञ्ज गलियां लस्सी पेढ़ेयां दी याद बड़ी आवे,
नी मैं वृंदावन कुम दी.....

ओदे मिलणे नूं जी बड़ा करदा दिन राती ओदी याद सतावे
होवे नज़र सबल्ली जे 'मधुप' ते मेरा सुपना साकार हो जावे,
मुक जान पव्वाढ़े सारे जग दे ब्रज वास जे मैनूं मिल जावे,
नी मैं वृंदावन कुम दी.....

कवि : सुप्रसिद्ध लेखक एवं संकीर्तनाचार्य श्री केवल कृष्ण 'मधुप' (मधुप हरि जी महाराज) अमृतसर (9814668946)
स्वर : सर्व मोहन (टीनू सिंह)

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/17285/title/mainu-yaad-bihari-ji-di-aawe-banka-nit-mere-supne-ch-aave

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |